॥ संतबानी ॥

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जगत-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी और उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और जो छपी थीं सो ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में या क्षेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रन्थ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये। भर सक तो पूरे ग्रन्थ छापे गये हैं और फुटकल शब्दों की हालत में सर्व साधारण के उपकारक पद चुन लिये हैं। प्रायः कोई पुस्तक बिना दो लिपियों का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी गई है और कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत .फुट-नोट में दे दिये हैं। जिन महात्मा की बानी है उनका जीवन चरित्र भी साथ ही छापा गया है और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उनके वृत्तान्त और कौतुक संक्षेप से .फुट-नोट में लिख दिये गये हैं।

दो अन्तिम पुस्तकें इस पुस्तक-माला की अर्थात् संतबानी संग्रह भाग १ (साखी) और भाग २ (शब्द) छप चुकीं, जिनका नमूना देख कर महामहोपाध्याय प० सुधाकर द्विवेदी बैकुंठ-वासी ने गद्गद होकर कहा था—"न भूतो न भविष्यति"।

एक अनूठी और अद्वितीय पुस्तक महात्माओं और विद्वानों के वचनों की "लोक परलोक हितकारी" नाम की गद्य में सन् १९१९ में छपी है जिसके विषय में श्रीमान् महाराजा काशी नरेश ने लिखा है—"वह उपकारी शिक्षाओं का अचरज संग्रह है जो सोने के तोल सस्ता है"।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तकमाला के जो दोष उनकी दृष्टि में आवें उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजें जिससे वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें।

हिन्दी में और भी अनूठी पुस्तकें छपी हैं जिनमें प्रेम कहानियों के द्वारा शिक्षा बतलाई गई है। उनके नाम और दाम सूची से, जो कि इस पुस्तक के अंत में छपी है देखिये। अभी हाल में कबीर बीजक और अनुराग सागर भी छापा गया है जिसका दाम क्रमशः ॥।) और १) है।

मैनेजर, बेलवेडियर छापाख़ाना,

मई सन् १९३१ ई०

इलाहाबाद।

महात्मा दूलनदास जी का
जीवन-चरित्र

महात्मा दूलनदास जी के जीवन का प्रमाणिक वृत्तान्त भी कितने ही प्रसिद्ध साधोँ और भक्तों की भाँति नहीँ मिलता। यह जगजीवन साहिब के गुरुमुख चेले थे जो थोड़े बरस अट्ठारहवेँ शतक बिक्रमीय के पिछले भाग मेँ और बिशेष काल तक उन्नीसवेँ शतक के अगले भाग मेँ वर्त्तमान थे।

यह जाति के सोम-बंशी ठाकुर थे जिनका जन्म समेसी गाँव ज़िला लखनऊ मेँ एक ज़मींदार के घर हुआ। जगजीवन साहिब से मौज़ा सरदहा मेँ उपदेश लेने पर यह बहुत काल तक उनके संग कोटवा मेँ रहे फिर ज़िला रायबरैली मेँ धर्म्मे नाम का एक गाँव बसाया जहाँ आकर बिश्राम किया और बहुत काल तक परमार्थ का सदाब्रत बाँट कर चोला छोड़ा।

इन के चमत्कार की कथाओं मेँ एक कथा यह प्रसिद्ध है कि बाराबंकी के उमापुर गाँव मेँ एक साधू नेवलदासजी विराजते थे जिन के पास एक मुसल्मान फ़कीर रहा करता था। एक दिन नेवलदासजी ने उस फ़क़ीर से कहा कि तेरे जीवन का कागज़ फटा ही चाहता है दस दिन और रह गये हैँ। यह सुन कर फ़क़ीर ने सोचा कि इसी मीआद मेँ जगजीवन साहिब की चौदहो गद्दियोँ और चारो पायोँ का दर्शन करलूँ, सो सिवाय महात्मा दूलनदास जी के पाये के, सब गद्दियोँ और तीन पायोँ के दर्शन किये तो सब ने नेवलदास जी साधू के वचन को सकारा, पर जब वह महात्मा दूलनदास जी के पास नवेँ दिन पहुँचा और हाल कह कर भभूत माँगी तो महात्माजी बोले कि नेवलदास ने मिथ्या नहीं कहा था परन्तु कागज़ तेरे "जीवन" का नहीं फटा है बरन तेरे दरिद्र का। फिर उसकी प्रार्थना पर उसे दूसरे दिन तक अपने चरनों मेँ रहने की आज्ञा दी। जब मरने का दिन बीत गया तो वह फ़क़ीर ख़ुश ख़ुश

नेवलदास साधू के पास गया और अपना वृत्तान्त कहा जिस पर वह साधू हँस कर बोला कि दूलन दफ़्तर का मालिक है अपने सामर्थ से तेरे जीवन के काग़ज़ की जगह तेरे दरिद्र का कागज़ फाड़ दिया अब जा कर निश्शंक भजन में लग।

दूलनदास जी गृहस्थ आश्रम ही में रहे, ज़ाहिर में ज़मींदारी के काम को नहीं छोड़ा और यही मर्य्यादा जगजीवन साहिब के समस्त गद्दियों और पायों की है।

दूलनदास जी के पदों और साखियों के हम कई बरस से खोज में थे और कोटवा के गुरुधाम से बहुत जतन करके मँगाना चाहा परन्तु न मिले। थोड़े दिन हुए राजा पृथ्वीपाल सिंह साहिब रईस जिला बाराबंकी ने कृपा करके थोड़े से पद भेजे फिर ठाकुर गंगा बख़्श सिंह जी जमींदार मौज़ा टंडवा ज़िला फ़ैज़ाबाद ने विशेष शब्द अनुग्रह करके भेजे और कुछ और इधर उधर से इकट्ठा करके यह पुस्तक छापी जाती है। इन दोनों महाशयों को हम हृदय से धन्यवाद देते हैं॥

इलाहाबाद,
अगहन, सम्वत १९७१

अधम,
एडिटर, संतबानी पुस्तक-माला।

॥ सूचीपत्र ॥

साखी

दूलनदास जी

की

बानी

नाम महिमा ।

॥ शब्द १ ॥

नाम सुमिरु मन मुरुख अनारी ।
छिन छिन आयू घटत जातु है, समुझि गहहु सत डोरि सँभारी ॥१॥
यह जीवन सुपने को लेखा, का भूलसि झूठी संसारी ।
अंत काल कोइ काम न अइहै, मातु पिता सुत बंधू नारी ॥२॥
दिवस चारि को जगत सगाई, आखिर नाम सनेह करारी ।
रसना सत्त नाम रटि लावहु, उघरि जाइ तोरि कपट किवारी ॥३॥
नाम कि डोरि पोढ़ि धरनी धरु, उलटि पवन चढ़ु गगन अटारी ।
तहँ सत साहिब अलख रूप वै, जन दूलन करु दरस विदारी ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

मन सत्य नाम रट लाउ रे ॥ टेक ॥
राति माति रहु नाम रसायन, अवर सबहिँ बिसराउ रे ॥१॥
त्रिकुटी तिरथ प्रेम जल पूरन, तहँ सुरत अनहवाउ रे ॥२॥
करि असनान होहु तुम निर्मल, दुरमति दूरि बहाउ रे ॥३॥
दूलनदास सनेह डोरि गहि, सुरति चरन लपटाउ रे ॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

कोइ बिरला यहि बिधि नाम कहै ॥ टेक ॥
मंत्र अमोल नाम दुइ अच्छर, बिनु रसना रट लागि रहै ॥१॥
होठ न डोलै जीभ न बोलै, सूरत धरनि दिढ़ाइ गहै ॥२॥
दिन औ राति रहै सुधि लागी, यह माला यह सुमिरन है ॥३॥
जन दूलन सत गुरन बतायो, ताकी नाव पार निबहै ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

रहु मन नाम की डोरि सँभारे ।
धृग जीवन नर नाम भजन बिनु, सब गुन बृथा तुम्हारे ॥ १ ॥
पाँच पचीसो के मद माते, निस दिन साँझ सकारे ।
बंदी-छोर नाम सुमिरन बिनु, जन्म पदारथ हारे ॥ २ ॥
अजहुँ चेत करु हेत नाम तें, गज गनिका जिन्ह तारे ।
चाखि नाम रस मस्त मगन हूँ, बैठहु गगन दुवारे ॥ ३ ॥
यह कलि काल उपाइ अवर नहिं, बनि है नाम पुकारे ।
जगजीवन साईं के चरनन, लागे दास दुलारे ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

यह नइया डगमगि नाम बिना । छाइ ले सत्त नाम रटना ॥१॥
हृव उत भौजल अगम घना । अहै जरूर पार तरना ॥२॥
मैं निगुनी गुन एकौ नाहीं । माँझ धार नहिं कोउ अपना ॥३॥
दिहेउँ सीस सतगुरु चरना । नाम अधार है दुलन जना ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

रहु सोहँ राम नाम रट लाई ।
काहे रटहु तुम नाम अच्छर दुइ, जौनी बिधि रटि जाई ॥१॥
राम राम तुम रटहु निरंतर, खोजु न जतन उपाई ।
जानि परत मोहिं भजन पंथ की, यही अरुझनि भाई ॥२॥

बालमीकि उलटा जप कीन्हेउ, भयौ सिद्ध सिधि पाई।
सुवा पढ़ावत गनिका तारी, देखु नाम प्रभुताई ॥३॥
दूलनदास तू राम नाम रटु, सकल सबै बिसराई।
सतगुरु साईं जगजीवन के, रहु चरनन लपटाई ॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

बाजत नाम नौबति आजु।
हूँ सावधान सुचित्त सीतल, सुनहु गैब अवाजु ॥१॥
सुख कंद अनहद नाद धुनि सुनि, दुख दुरित[१] क्रम भ्रम भाजु।
सत लोक बरसो पानि धुनि, निर्बान यहि मन बाजु ॥२॥
तोहुँ चेतु चित दै प्रेम मगन, अनंद आरति साजु।
घर राम आये जानि, भइनि[२] सनाथ बहुरा[३] राजु ॥३॥
जगजिवन सतगुरु कृपा पूरन, सुफल भे जन काजु।
धनि भाग दूलन दास तेरे, भक्ति तिलक बिराजु ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

मन यहि नाम की धुनि लाउ।
रटु निरंतर नाम केवल, अवर सब बिसराउ ॥ १ ॥
साधि सूरत आपनी, करि सुवा[४] सिखर[५] चढ़ाउ।
पोषि प्रेम प्रतीत तैं, कहि राम नाम पढ़ाउ ॥ २ ॥
नामही अनुरागु निसु दिन, नाम के गुन गाउ।
बनी तो का अबहिं, आगे और बनी बनाउ ॥ ३ ॥
जगजिवन सतगुरु बचन साचे, साच मन माँ लाउ।
करु बास दूलनदास सत माँ, फिरि न यहि जग आ

---
[१] ... भागे। (२) हुई। (३) पलटा, लौटा। (४) तोता। (५

॥ शब्द ९ ॥

जब गज अरध नाम गुहरायो ।
जब लगि आवै दूसर अच्छर, तब लगि आपुहि धायो ॥१॥
पाँय पियादे भे करुनामय, गरुड़ासन बिसरायो ।
धाय गजंद गोद प्रभु लीन्हो, आपनि भक्ति दिढ़ायो ॥२॥
मीरा को बिष अमृत कीन्हो, बिमल सुजस जग छायो ।
नामदेव हित कारन प्रभु तुम, मिर्तक गाय जियायो ॥३॥
भक्त हेत तुम जुग जुग जन्मेउ, तुमहिं सदा यह भायो ॥
बलि बलि दूलनदास नाम की, नामहि ते चित लायो ॥४॥

॥ शब्द १० ॥

द्रुपदी राम कृस्न कहि टेरी ।
सुनत द्वारिका तें उठि धायो, जानि आपनो चेरी ॥ १ ॥
रही लाज पछितात दुसासन, अंबर[1] लाग्यो ढेरी ।
हरि लीला अवलोक चकित चित, सकल सभा भुइँ हेरी[2] ॥२॥
हरि रखवार सामरथ जाके, मूल अचल तेहि केरी ।
कबहुँ न लागत तासि बाव तेहि, फिरत सुदरसन[3] फेरी ॥३
अब मोहिं आसा नाम सरन की, सीस चरन दियो तेरी ।
दूलनदास के साईं जगजीवन, इतनी बिनती मेरी ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

भजहु नाम मोरि लगन सुधारन,
पूरन ब्रह्म अखिल[4] जग कारन ॥ १ ॥
अर्ध नाम की सुरति करत मन,
करुना-कंद[5] गजंद-उबारन ॥ २ ॥
लाउ जिकिरि[6] मन फिकिरि फरक करु ।
नाम सदा जन संकट टारन ॥३॥

---

(१) वस्त्र । (२) ज़मीन की ओर देखना सोच का निशान है । (३) बिस्नु का चक्र । (४) पूरा । (५) दया के मूल । (६) सुमिरन ।

द्रुपदी लज्या के रखवारे,
जन प्रहलाद कि पैज सँभारन[1] ॥ ४ ॥
होहु निडर मन सुमिरि नाम अस,
सर्म रु कर्म कुअंक भिजारन[2] ॥ ५ ॥
दूलनदास के साइँ जगजीवन,
दिहिन नाम आवागवन निवारन ॥ ६ ॥

॥ शब्द १२ ॥

रसना राम नाम न लिया ।
मनहिं ज्ञान बिचार गुरु के, चरन सीस न दिया ॥१॥
रक्त पानि समोइ कै, जिन्ह अजब जामा सिया ।
तेहि बिसारि गँवार काहे, रखत पाहन[3] हिया ॥ २ ॥
अहो अंध अचेत मुग्धा, समुझि काम न किया ।
अछत[4] नाम पियूष[5] पासहिँ, मोह माहुर[6] पिया ॥३॥
गयो गर्भ बिनास काहे न, कौल कारन जिया ।
दूलन हरि की भक्ति बिनु, यह जिन्दगानी छिया ॥४॥

भेद का अंग

॥ शब्द १ ॥

साइँ तेरो गुप्त मर्म हम जाना ।
कस करि कहौं बखानी ॥ टेक ॥
सतगुरु संत भेद मोहिँ दीन्हा, जग से राखा छानी ।
निज घर का कोऊ खोज न कीन्हा, करम भरम अटकानी ॥१

---

(१) प्रह्लाद भक्त के राम नाम की टेक या प्रण को सँभालने वाले। (२) खोटे भ्रम (क्रिया) और कर्म के अंक को मेटने वाले। (३) पत्थर या मूरत पत्थर की। (४) ...क्त = मौजूद होते। (५) अमृत। (६) विष।

निज घर है वह अगम अपारा, जहाँ बिराजै स्वामी।
ता के परे अलोक अनामी, जा का रूप न नामी ॥ २॥
ब्रह्म रूप धरि सृष्टि उपाई, आप रहा अलगानी।
वेद कितेब की रचन रचाई, दस औतार धरानी ॥ ३॥
निज माता सीता सोइ राधा, निज पितु राम सुवामी।
दोउ मिलि जीवन बंद छुड़ाया, निज पद में दिया ठामी ॥४॥
दूलनदास के साईं जगजीवन, निज सुत जक्त पठानी।
मुक्ति द्वार की कूँची दीन्ही, ता तें कुलुफ[1] खुलानी ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

दूलन यह मत गुप्त है, प्रगट न करो बखान।
ऐसे राखु छिपाय मन, जस बिधवा औधान[2] ॥

॥ शब्द २ ॥

देख आयों मैं तो साईं की सेजरिया।
साईं की सेजरिया सतगुरु की डगरिया ॥ १ ॥
सबदहि ताला सबदहि कुंजी, शब्द की लगी है जँजिरिया ॥२॥
सबद ओढ़ना सबद बिछौना, सबद की चटक चुनरिया ॥३॥
सबद सरूपी स्वामी आप बिराजैं, सीस चरन में धरिया ॥४॥
दूलनदास भजु साईं जगजीवन, अगिन से अहँग उजरिया ५

चितावनी

॥ शब्द १ ॥

पछितास क्या दिन जात बीते, समुझ करु नर चेत रे।
संघ तेरे कंध सिर पर, काल डंका देत रे ॥ १ ॥
हुसियार है गुन गाव प्रभु के, ठाढ़ रहु गुरु खेत रे।
ताके रहै छूटै नहीं, जिमि राहु रवि ससि केत रे ॥ २ ॥

---

(१) ताला। (२) गर्भ, हमल।

जम द्वार तर सब पीसिगे, चर अचर निन्दक जेत रे।
नहिँ पियत अमृत नाम रस, भरि स्वास सुरत सचेत रे ॥३
मद मोह महुवा दाख दुख, बिष का पियाला लेत रे।
जग नात गोत बिसारि सब, हर दम गुरू से हेत रे ॥ ४ ॥
सगली सुपन अपना वही, जिस रोज परत सँकेत रे।
यह आदि सिरजनहार हरि, सतनाम भो जल सेत रे।
जन दुलन सतगुरु चरन बंदत, प्रेम प्रीति समेत रे ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

तू काहे को जग में आया, जो पै नाम से प्रीति न लाया रे॥ टेक
तृष्ना काम सवाद घनेरे, मन से नहिँ बिसराया।
भोग बिलास आस निस बासर, इत उत चित भरमाया रे ॥१
त्रिकुटी तिरथ प्रेम जल निर्मल, सुरत नहीं अन्हवाया।
दुर्मति करम मैल सब मन के, सुमिरि सुमिरि न छुड़ाया रे ॥२
कहँ से आये कहँ को जैहे, अंत खोज नहिँ पाया।
उपजि उपजि के बिनसि गये सब, काल सबै जग खाया रे ३
कर सतसंग आपने अंतर, तजि तन मोह औ माया।
जन दूलन बलि बलि सतगुरु के, जिन मोहिँ अलख लखाया रे ॥४॥

उपदेश का अंग।

॥ शब्द १ ॥

बोल मनुआँ राम राम ॥ टेक ॥

सत्त जपना और सुपना, जिक्र लावो अष्ट जाम ॥ १ ॥
समुझि बूझि बिचारि देखो, पिंड पिँजड़ा धूम घाम ॥ २ ॥
बालमीकि हवाल पूछो, जपत उलटा सिद्ध काम ॥ ३ ॥
दास दूलन आस प्रभु की, मुक्ति-करता सत्त नाम ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

राम नाम दुइ अच्छरै, रटै निरंतर कोय ।
दूलन दीपक बरि उठै, मन परतीति जो होय ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

जागु जागु आतमा, पुरान दाग धोउ रे ।
कर्म दूर करु, कीच काम खोउ रे ॥ १ ॥
अपनी सुधि भूलि गई, और की क्या टोउ रे ।
सत्त बात झूठ करै, झूठ ही को गोउ रे[1] ॥ २ ॥
छूटै बात जानि जानि, द्वार द्वार रोउ रे ।
उत्तर पानी साबुन का, प्रेम पानी भोउ[2] रे ॥ ३ ॥
लाग दाग धोय डारु, वाह वाह होउ रे ।
दूलन बेकूफ काम, गाफिल ह्वै न सोउ रे ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

मन तुम रहौ चरनन लगे ।
बिनु चरन कँवल सनेह, अवर बिधान सब डगमगे ॥१॥
बहु देह धरि धरि गये मरि मरि, जीव बिरले जगे ।
नर जनम उत्तम पाइ, चरन सनेह बिन सब ठगे ॥ २ ॥
का अन्न तजि पय पिये, का भुज दंड दँही दगे ।
का तजे घर घरनी[3], जो चरन सनेह नाम न रँगे ॥३॥
जन दूलन सतगुरु चरन जानहु, हित सनेही सगे ।
धरि ध्यान लै सत सुरति संगम, रहहु छवि रस पगे ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

चलो चढ़ो मन यार महल अपने ॥ टेक ॥
चौक चाँदनी तारे झलकैं, बरनत बनत न लाल गने ॥१॥
हीरा रतन जड़ाव जड़े जहँ, सोभित कोटि निसान बने ॥२॥

---

(१) छिपा कर रखना, पल्ले रखना। (२) थोड़े पानी से भिँगाना। (३) स्त्री।

सुखमन पलँगा सहज बिछौना, सुख सोवो को करै मने[1] ॥३॥
दूलनदास के साईं जगजीवन, को आवै यह जग सुपने ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

जोगी चेत नगर में रहो रे ॥ टेक ॥
प्रेम रंग रस ओढ़ चदरिया, मन तसबीह[2] गहो रे ॥१॥
अन्तर लाओ नामहि की धुनि, करम भरम सब धो रे ॥२॥
सूरत साधि गहो सत मारग, भेद न प्रगट कहो रे ॥३॥
दूलनदास के साईं जगजीवन, भवजल पार करो रे ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

अइलेहु यहि देसवाँ, मनुवाँ कै मइल धुवैतेहु ।
सतगुरु घाट काया कै सौंदन, नाम साबुन लपटैतेहु ॥१॥
धोये मलहिँ मिटै कस कलिमल, दुबिधा दूरि बहैतेहु ।
ज्ञान बिचार ताहि करि धोबी, प्रेम कै पाट बनैतेहु ॥२॥
स्वारथ छाड़ि नाम आसा धरि, बिषय बिकार बहैतेहु ।
भ्रम तजि अगुन सगुन करि मन तेँ, भव सागर तरि जैतेहु ॥३
सुत तिय परिवारहिँ अरु धन तजि, इनके बस न भुलैतेहु ।
अनमिलना मिलना काहू से, हित अनहित न चिन्हैतेहु ॥४
चौरासी चित मोह बिसरतेहु, हरि पद नेह लगैतेहु ।
दूलनदास बंदगी गावै, बिना परिस्रम जैतेहु ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

अब काहे भूलहु हो भाई, तूँ तो सतगुरु सबद समइलेहु ॥ टेक
ना प्रभु मिलिहै जोग जाप तेँ, ना पथरा के पूजे ।
ना प्रभु मिलिहै पउआँ पखारे, ना काया के भूँजे ॥ १ ॥

(१) कौन वरज सकता है। (२) माला।

दया धरम हिरदे में राखहु, घर में रहहु उदासी ।
आन के जिव आपन करि जानहु, तब मिलिहै अबिनासी ॥२
पढ़ि पढ़ि के पंडित सब थाके, मुलना पढ़ै कुराना ।
भस्म रमाइ के जोगिया भूले, उनहूँ मरम न जाना ॥ ३ ॥
जोग जाप तहिया से छाड़ल, छाड़ल तिरथ नहाना ।
दूलनदास बंदगी गावै, है यह पद निर्वाना ॥ ४ ॥

॥ शब्द ८ ॥

प्रानी जपि ले तू सतनाम ॥ टेक ॥
मात पिता सुत कुटुम कबीला, यह नहिं आवै काम ।
सब अपने स्वारथ के संगी, संग न चलै छदाम ॥ १ ॥
देना लेना जो कुछ होवै, करिले अपना काम ।
आगे हाट बजार न पावै, कोइ नहिं पावै ग्राम ॥ २ ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह ने, आन बिछाया दाम[1] ।
क्यौं मतवारा भया बावरे, भजन करो निःकाम ॥ ३ ॥
यह नर देही हाथ न आवै, चल तू अपने धाम ।
अब की चूक माफ नहिं होगी, दूलन अचल मुकाम ॥ ४ ॥

॥ शब्द ९ ॥

जो कोइ भक्ति किया चहै भाई ॥ टेक ॥
करि वैराग भसम करि गोला, सो तन मनहिं चढ़ाई ॥ १ ॥
ओढ़ि के बैठ अधिनता चादर, तज अभिमान बड़ाई ॥ २ ॥
प्रेम प्रतीत धरै इक तागा, सो रहै सुरत लगाई ॥ ३ ॥
गगन मँडल बिच अभरन[2] झलकत, क्यौं न सुरत मन लाई॥४
सेस सहस मुख निसु दिन बरनत, बेद कोटि गुन गाई ॥ ५ ॥
सिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक, ढूँढ़त थाह न पाई ॥ ६ ॥

---

(१) जाल। (२) भूषन, जवाहिर।

नानक नाम कबीर मता है, सो मोहिँ प्रगट जनाई ॥७॥
ध्रुव प्रह्लाद यही रस माते, सिव रहे ताड़ी लाई ॥८॥
गुरु की सेवा साध की संगत, निसु दिन बढ़त सवाई ॥९॥
दूलनदास नाम भज बन्दे, ठाढ़ काल पछिताई ॥१०॥

॥ शब्द १० ॥

जग में जै दिन है जिंदगानी ॥ टेक ॥
लाइ लेव चित गुरु के चरनन, आलस करहु न प्रानी ॥१॥
या देही का कौन भरोसा, उभरा[1] भाठा[2] पानी ॥२॥
उपजत मिटत बार नहिँ लागत, क्या मगरूर गुमानी ॥३॥
यह तो है करता की कुदरत, नाम तू ले पहिचानी ॥४॥
आज भलो भजने को औसर, काल की काहु न जानी ॥५॥
काहु के हाथ साथ कछु नाहीं, दुनियाँ है हैरानी ॥६॥
दूलनदास बिस्वास भजन करु, यहि है नाम निसानी ॥७॥

॥ शब्द ११ ॥

तैं राम राम भजु राम रे, राम गरीब निवाज हो ॥टेक॥
राम कहे सुख पाइहो, सुफल होइ सब काज ।
परम सनेही राम जो, रामहिँ जन की लाज हो ॥ १ ॥
जनम दीन्ह है राम जी, राम करत प्रतिपाल ।
राम राम रट लाव रे, रामहिँ दीनदयाल हो ॥ २ ॥
मात पिता गुरु राम जी, रामहिँ जिन बिसराव ।
रहो भरोसे राम के, तैं रामहिँ से चित चाव हो ॥३॥
घर बन निसु दिन राम जी, भक्तन के रखवार ।
दुखिया दूलनदास को रे, राम लगइहैं पार हो ॥४॥

(१) चढ़ा । (२) घटा ।

॥ शब्द १२ ॥

राम राम रटु राम राम सुनु, मनुवाँ सुवा सलोना रे ॥टेक॥
तन हरियाले बदन[1] सुलाले, बोल अमोल सुहौना रे ॥१॥
सत्त तंत्र अरु सिद्ध मंत्र पढ़ु, सोइ मृतक जियौना रे ॥२॥
सुबचन तेरे भौजल बेरे,[2] आवागमन मिटौना रे ॥३॥
दुलनदास के साईं जग जीवन, चरन सनेह दृढ़ौना रे ॥४॥

॥ शब्द १३ ॥

मन राम भजन रहु राजो रे ॥ टेक ॥
दुनियाँ दौलत काम न अइहै, मति भूलहु गज बाजी[3] रे ॥१
निसु दिन लगन लगी भगवानहिं, काह करै जम पाजी रे ॥२
तन मन मगन रहौ सिधि साधो, अमर लोक सुधि साजी रे॥३
दुलनदास के साईं जगजीवन, हरि भक्तो कहि गाजी रे॥४

॥ शब्द १४ ॥

मन रहि जा चरनन सीस धरो, लागि रहै धुनि हरो हरो ॥१
तोहि समझावौं घरी घरी, कुमति बिपति तोरि जाइ टरो ॥२
पाँच पचीसो एक करो, पियहु दरस रस पेट भरो ॥ ३ ॥
हारे बहुत बहुत खरो[4], चरन प्रीति बिन कछु न सरो ॥४॥
चरन प्रभाव जानु कुबरी[5], परसत गौतम नारि तरी[6] ॥५॥
साईं जगजीवन कृपा करो, जन दूलन परतीत परी ॥ ६ ॥

॥ शब्द १५ ॥

भजन करु संसै ना करु रे ॥ टेक ॥
सबद बिचारि खोजि ले मारग, चित तैं चेतहु वोहु घरु रे॥१
साईं मनसा फल के दाता, दृढ़ बिसवास हृदय धरु रे ॥२॥

---

(१) चिहरा। (२) बेड़ा, नाव। (३) हाथी घोड़ा। (४) थक कर। (५) कुबजा जिस की पीठ का कूब श्रीकृष्ण ने अपने चरण से सीधा किया। (६) गौतम की नारी अहिल्या जो सराप बस शिला बनी पड़ी थी और श्रीरामचंद्र के चरण लगाने से तरी।

अपने अंतर अधंर[1] डोरी, गहु तोहि काहुहिँ ना डरु रे ॥३॥
दुलनदास के साईँ जगजीवन, अब दै सीस चरन परु रे ॥४॥

बिनय का अंग

॥ शब्द १ ॥

साईँ हो गरीब नेवाज ॥ टेक ॥
देखि तुम्हैँ घिन लागत नाहीँ, अपने सेवक के साज ॥१॥
मोहिं अस निलज न यहि जग कोऊ, तुम ऐसे प्रभु लाज जहाज ॥२॥
और कछू हम चाहित नाहीँ तुम्हरे नाम चरन तेँ काज ॥३॥
दूलनदास गरीब निवाजहु, साईँ जगजीवन महराज ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

साईँ दरस माँगैाँ तोर, आपनो जन जानि साईँ मान राखहु मोर ॥१॥
अपथ[2] पंथ न सूझि इत उत, प्रबल पाँचोँ चोर ।
भजन केहि बिधि करौँ साईं, चलत नाहीँ जोर ॥ २ ॥
नाम लाइ दुरास[3] काहे, पतित, जन की दौर ।
बचन अवधि[4] अधार मेरे, आसरा नहिँ और ॥ ३ ॥
हेरिये करि कृपा जन तन, ललित[5] लोचन कोर ।
दास दूलन सरन आयो, राम बंदी-छोर ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

साईँ तेरे कारन नैना भये बैरागी ।
तेरा सत दरसन चहौँ, कछु और न माँगी ॥ १ ॥
निस बासर तेरे नाम की, अंतर धुनि जागी ।
फेरत हैाँ माला मनैाँ, अँसुवन झरि लागी ॥ २ ॥

---

(१) आकाश । (२) कुराह । (३) हटाते हो । (४) प्रतिज्ञा । (५) सुंदर, मोहनी ।

पलक तजी इत उक्ति तैं[1], मन माया त्यागी ।
दृष्टि सदा सत सनमुखी, दरसन अनुरागी ॥ ३ ॥
मदमाते राते मनौं, दाधे बिरह आगी ।
मिलु प्रभु दूलन दास के, करु परम सुभागी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

सुनहु दयाल मोहिँ अपनावहु ॥ टेक ॥
जन मन लगन सुधारन साईं, मोहि सो तुमहिँ बनावहु १
इत उत चित्त न जाइ हमारा, सूरत चरन कमल लपटावहु ॥२॥
तबहूं अब मैं दास तुम्हारा, अब जिनि बिसरौ जिनि बिसरावहु ॥३॥
दुलनदास के साईं जगजीवन, हमहूं काँ भक्तन माँ लावहु ॥४

॥ शब्द ५ ॥

साईं सुनहु बिनती मोरि ॥ टेक ॥
बुधि बल सकल उपाय-हीन मैं, पाँयन परौं दोऊ कर जोरि १
इत उत कतहूँ जाइ न मनुवाँ, लागि रहै चरनन माँ डोरि ॥२
राखहु दासहिं पास आपने, कस को सकिहै तोरि ॥३॥
आपन जानि कै मेटहु मेरे, औगुन सब क्रम भ्रम खोरि[2] ॥४॥
केवल एक हितू तुम मेरे, दुनियाँ भरी लाख करोरि ॥५॥
दुलनदास के साईं जगजीवन, माँगौं सत दरस निहोरि ॥६॥

॥ शब्द ६ ॥

साईं भजन ना करि जाइ ।
पाँच तसकर संग लागे, मोहिं हटकत[3] धाइ ॥ १ ॥
चहत मन सतसंग करनो, अधर बैठि न पाइ ।
चढ़त उतरत रहत छिन छिन, नाहिँ तहँ ठहराइ ॥ २ ॥
कठिन फाँसी अहै जग की, लियो सबहि बझाइ ।

---

(१) इधर अर्थात संसार की चतुरच्चता (उक्ति) की ओर से आँख मूँद ली।
(२) सराप (शाप), कसर। (३) रोकते हैं।

पास मन मनि नैन निकटहिँ, सत्य गयो भुलाइ ॥ ३ ॥
जगजिवन सतगुरु करहु दाया, चरन मन लपटाइ ।
दास दूलन बास सत माँ, सुरस नहिँ अलगाइ ॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

साइँ तेरो भजन ना हम जाना, ता तेँ बार बार पछिताना ॥टेक॥
भजन करंते दास मलूका, नाम भजन जिन्ह जाना ।
दीनदयाल भक्त हितकारी, लैहो रे परवाना ॥ १ ॥
गोपी ग्वाल भजन कहि गोकुल, सुरपति इन्द्र रिसाना ।
दीनदयाल रसन की लज्या, छत्र गोबर्धन ताना ॥२[1] ॥
कुतबदीन भजि भयो औलिया, औ मनसूर दिवाना ।
तेरे नाम भजन के कारन, बलख तजा सुलताना ॥३॥
भजन बखानत सुनत सबद, इक भइ अवाज असमाना ।
दूलनदास भजन करि निर्भय, रहु चरनन लपटाना ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

प्रभु तुम किहेउ कृपा बरियाईँ[2] ।
तुम कृपाल मैं कृपा नलायक[3], समुझि निवजतेहु साइँ ॥१॥
कूकुर धोये होइ न बाछा[4], सजै न नोच निचाई ।
बगुला होइ न मानस-बासी[5], बसहि जे बिषै तलाई ॥२॥
प्रभु सुभाउ अनुहारि चाहिये, पाय चरन सेवकाई[6] ।
गिरगिट पौरुष करै कहाँ लगि, दौरि कँड़ौरे[7] जाई ॥ ३ ॥

---

(१) जब गोकुल के वासियों ने इन्द्र की पुरातन पूजा श्रीकृष्ण के उपदेश से छोड़ कर कृष्ण को पूजा तो इन्द्र ने कोप करके मेघ को आज्ञा की कि घोर वर्षा करके गोकुल को जड़ से बहा दो। उस समय ब्रजवासियों ने श्री कृष्ण को टेरा जिन्हों ने गोवर्द्धन पहाड़ को उँगली पर उठा कर छाया करली और ब्रज को बचा लिया। (२) ज़बरदस्ती। (३) नालायक़। (४) गऊ का बच्चा। (५) मान सरोवरवासी। (६) ईश्वर सरीखा स्वभाव बन जाय तब उसके चरनों में बासा मिलै। (७) कंडा या उपले का ढ़ेर—मसल है "गिरगिटे कै दौड़ कँड़ौरे लै"।

अब नहिं बनत बनाये मेरे, कहत अहौँ गुहराई ।
दुलनदास के साईं जगजीवन समरथ लेहु बनाई ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

काह कहौँ कछु कहि नहिं आवै ॥ टेक ॥
गुन बिहीन मैं बौरी बिचारी, पिय गुन देय तौ पिय गुन गावै ॥१॥
काहु क राखि लीन्ह चरनन तर, काहू को इत उत भरमावै॥२
भाग सुहाग हाथ उन्हीं के, रोये कोऊ राज न पावै ॥३॥
दुलनदास के साईं जगजीवन, बिनती करि जन तुम्हँ सुनावै४

॥ शब्द १० ॥

राम तोरी माया नाचु नचावै ।
निसुबासर मेरो मनुआँ ब्याकुल, सुमिरन सुधि नहिं आवै॥१
जोरत तूरै[1] नेह सूत मेरो, निरवारत अरुझावै ।
केहि बिधि भजन करौं मोरे साहिब, बरबस मोहिं सतावै ॥२
सत सन्मुख थिर रहे न पावै, इत उत चितहिं डुलावै ।
आरत[2] पवरि[3] पुकारौं साहिब, जन फिरियादिहिं[4] पावै ॥३
थाकेउँ जन्म जन्म के नाचत, अब मोहिं नाच न भावै ।
दुलनदास के गुरु दयाल तुम, किरपहिं तेँ बनि आवै ॥४॥

प्रेम का अंग

॥ शब्द १ ॥

धन मोरि आज सुहागिन घड़िया ॥ टेक ॥
आज मोरे अँगना सन्त चलि आये, कौन करौँ मिहमनिया १
निहुरि निहुरि मैं अँगना बुहारौँ, मातो मैं प्रेम लहरिया ॥२

(१) तोड़े । (२) दीन आधीन । (३) द्वारे पर । (४) नालिश की सुनवाई ।

भाव के भात प्रेम के फुलका, ज्ञान की दाल उतरिया ॥३॥
दुलनदास के साईं जगजीवन, गुरु के चरन बलिहरिया ॥४

॥ शब्द २ ॥

जागु री मोरि सुरत पियारी ।
चरन कमल छवि झलक निहारी ॥ १ ॥
बिसरि जाइ दे यह संसारी ।
धरहु ध्यान मन ज्ञान बिचारी ॥ २ ॥
पाँच पचीसो दे झझकारी[1] ।
गहहु नाम की डोरि सँभारी ॥ ३ ॥
साईं जगजीवन अरज हमारी ।
दूलनदास को आस तुम्हारी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

सतनाम तेँ लागी अँखिया, मन परिगै जिकिर[2] जँजीर हो १
सखि नैना बरजे ना रहैं, अब ठिरे[3] जात वोहि तीर[4] हो ॥२
नाम सनेही बावरे, दृग भरि भरि आवत नीर हो ॥३॥
रस-मतवाले रस-मसे[5], यहि लागी लगन गँभीर हो ॥४॥
सखि इस्क पिया से आसिकाँ, तजि दुनिया दौलत भीर[6] हो ५
सखि गोपीचन्दा भरथरी, सुलताना भयो फकीर हो ॥६
सखि दूलन का से कहै, यह अटपटि[7] प्रेम से पीर हो ॥७

॥ शब्द ४ ॥

रटि लागि हिये रमई रमई ॥ टेक ॥
गुरु अंतर डोरी पोढ़ि दई ।
नित बाढ़न लागो प्रीति नई ॥ १ ॥

---

(१) फटकार या डाँट। (२) स्मरण या सुमिरन। (३) विशेष शीतलता से जम जाने को "ठिरना" कहते हैं—प्रतिलिपि में "टरे" है जिसके अर्थ खिंचने के हैं। (४) पास। (५) रस में पगे। (६) प्रेमी जन जिन की प्रीति प्रीतम से लगी है उन्हें संसार और धन माल की चिन्ता नहीं रहती। (७) अड़बड़, अनोखी।

जनि मानै बैर विरोध कोई ।
जग माँ जिंदगानी है थोरई[१] ॥ २ ॥
दुनियाँ दुचिताई भूलि गई ।
हम समुझि गरीबी राह लई ॥ ३ ॥
चरनाँ रज अंजन नैन दई ।
जन दूलन देखत राम-मई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

पिया मिलन कब होइ, अँदेसवा लागि रही । टेक ॥
जब लग तेल दिया में बाती, सूझ परै सब कोइ ।
जरिगा तेल निपटि गइ बाती, लै चलु लै चलु होइ ॥१॥
बिन गुरु मारग कौन बतावे, करिये कौन उपाय ।
बिना गुरू के माला फेरै, जनम अकारथ जाय ॥ २ ॥
सब संतन मिलि इक मत कीजै, चलिये पिय के देस ।
पिया मिलैं तो बड़े भाग से, नहिं तो कठिन कलेस ॥३॥
या जग ढूँढ़ूँ वा जग ढूँढ़ूँ, पाऊँ अपने पास ।
सब संतन के चरन बन्दगी, गावै दूलनदास ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

हुआ है मस्त मंसूरा, चढ़ा सूली न छोड़ा हक़ ।
पुकारा इश्क़बाज़ों को, अहै मरना यही बरहक़ ॥१॥
जो बोले आशिक़ाँ यारां, हमारे दिल में है जो शक ।
अहै यह काम सूरों का, लगाये पोर से अब तक ॥२॥
शम्सतबरेज़ की सीफ़त, जहाँ में ज़ाहिरा अब तक ।
निज़ामुद्दीन सुल्ताना, सभी मेटे दुनी के धक ॥३॥

(१) थोड़ी ही ।

निरख रहे नूर अल्लह का, रहे जीते रहे जब तक।
हुआ हाफ़िज़ दिवाना भी, भये ऐसे नहीं हर यक ॥४॥
सुना है इश्क़ मजनूँ का, लगी लैला कि रहती झक[1]।
जलाकर ख़ाक तन कीना, हुये वह भी उसी माफ़िक़ ॥५॥
दुलन जन को दिया मुरशिद, पियाला नाम का थकथक[2]।
वही है शाह जग जीवन, चमकता देखिये लक लक[3] ॥६॥

॥ शब्द ७ ॥

अब तो अफ़सोस मिटा दिल का, दिलदार दीद में आया है।
संतौं की सुहबत में रहकर, हक़ हादी को सिर नाया है ॥१
उपदेश उग्र गहि सत्त नाम, सोइ अष्ट जाम धुनि लाया है।
मुरशिद की मेहर हुई यों कर, मज़बूत जोश उपजाया है ॥२
हर वक्त तसौवर में सूरत, मूरत अंदर झलकाया है।
बूअली क़लंदर औ फ़रीद, तबरेज़ वही मत गाया है ॥ ३
कर सिद्दक़ सबूरी लामकान, अल्लाह अलख दरसाया है।
लखि जन दूलन जगजिवन पीर, महबूब मेरे मन भाया है।
ख़ाविन्द ख़ास ग़ैबी हुज़ूर, वह दिल अंदर में आया है ॥४

॥ शब्द ८ ॥

ऐसा रँग रँगैहौं, मैं तो मतवालिन होइहौं ॥ टेक ॥
भट्ठी अधर लगाइ, नाम की सोज[4] जगैहौं।
पौन सँभारि उलटि दै झौंका, करकट कुमति जलैहौं ॥१॥
गुरुमति लहन[5] सुरति भरि गागरि, नरिया नेह लगैहौं।
प्रेम नीर दै प्रीति पुचारी, यहि विधि मदवा चुवैहौं ॥२॥

---

(१) जोश। (२) लबालब भरा हुआ। (३) नूरानी; चमचम। (४) सोज़ = तपन, बिरह। (५) जामन जिस से शराब का ख़मीर जल्द उठ आता है।

अमल अगारो नाम खुमारो, नैनन छबि निरतैहौं ।
दै चित चरन अयूँ सत सन्मुख, बहुरि न यहि जग ऐहौं ॥३॥
ह्वै रस मगन पियौं भर प्याला, माला नाम डोलैहौं ।
कह दूलन सतसाईं जगजीवन, पिउ मिलि प्यारी कहैहौं ॥४

करुणा का अंग ।

॥ शब्द १ ॥

हमारे तो केवल नाम अधार ।
पूरन काम नाम दुइ अच्छर, अंतर लागि रहै खुटकार ॥१।
दासन पास बसै निसु बासर, सोवत जागत कबहुँ न न्यार।
अरध नाम टेरत प्रभु धाये, आये तुरत गज गाढ़ निवार ॥२
जन मन-रंजन सब दुख-भंजन, सदा सहाय परम हित प्यार।
नाम पुकारत चीर बढ़ायो, द्रुपदी लज्या के रखवार ॥३
गौरि गणेस रु सेस रटत जेहिं, नारद सुक[1] सनकादि पुकार।
चारहुँ मुख जेहिं रटत बिधाता[2], मंत्र राज सिव मन सिंगार ४

॥ शब्द २ ॥

भक्तन नाम चरन धुनि लाई ॥ टेक ॥
चारिहु जुग गोहारि प्रभु लागे, जब दासन गोहराई ॥१॥
हिरनाकुस रावन अभिमानी, छिन माँ खाक मिलाई ॥२॥
अबिचल भक्ति नाम की महिमा, कोऊ न सकत मिटाई ॥३॥
कोउ उसवास[3] न एको मानहु, दिन दिन की दिनताई ॥४॥
दुलनदास के साइं जगजीवन, है सतनाम दुहाई ॥ ५ ॥

---

(१) सुकदेव। (२) ब्रह्मा। (३) संसय।

बिबेक ज्ञान ।

कहत सो अहौँ पुकारी । सुनिये साधो लेहु बिचारी ॥ १
सबद कहै परमाना । जिन्ह प्रतीत मन आना ॥ २ ॥
सबद कहै सो करई । बिन बूझै भ्रम माँ परई ॥ ३ ॥
सबद कहै बिस्तारा । सबदै सब घट उजियारा ॥ ४ ॥
सबद बूझि जेहि आई । सहजे माँ तिनहीं पाई ॥५॥
सहज समान न आना । सहजे मिलि कृपा निधाना ॥६॥
सहज भजन जो करई । सो भवसागर तरई ॥ ७ ॥
भवसागर अपरमपारा । सूझत वार न पारा ॥ ८ ॥
रहै चरन सरनाई । तब भवसागर तरि जाई ॥ ९ ॥
भवसागर तरि पारा । तब भयो सबन तें न्यारा ॥१०॥
ह्वै न्यारा गुन गावै । तेहि गति कोउ न पावै ॥११॥
पदुम[1] पात्र ज्योँ नीरा । अस मन रहै तेहि तीरा ॥१२॥
मगन भयो मस्ताना । सो साधू भे निरबाना ॥१३॥
अब कछु कहा न जाई । कलि देखि कै कहौँ सुनाई ॥१४॥
बहु प्रपंच अधिकारा । जग जानि करत अपकारा ॥१५॥
असुभ कर्म सब करहीं । ते जाइ नर्क माँ परहीं ॥ १६ ॥
साध कि निंद्रा करहीं । सो कबहूँ नहिँ निस्तरहीँ ॥१७॥
सत सबद कहत है बानी । सुखित जन अस्तुति आनी ॥१८॥
जिन्ह दियो संत काँ माथा । तेहि कीन्हेउ राम सनाथा ॥१९
सो नाहीं दुख पावै, जो सीस संत काँ नावै ॥२०॥
पंडित को पँडिताई । अब तिन्ह की कहौँ सुनाई ॥२१॥
बेद ग्रंथ पढ़ि भूले । मैं त्वैं करिकै फूले ॥२२॥

---

(१) कँवल ।

पंडित भला निमाना[1] । जिन्ह राम नाम पहिचाना ॥२३॥
कलिजुग के कथि ज्ञानी । कथहीं बहुत बखानी ॥ २४ ॥
अनतस ज्ञान कथाहीं । मन भजन करत है नाहीं ॥२५॥
जो रहहिं नाम तें लीना । सो ज्ञानी परबीना ॥ २६ ॥
सो आहि सत्त ज्ञानी । जेहि सुरत चरन लपटानी ॥२७॥
सत्य ज्ञान तत सारा । जिन्ह के है नाम अधारा ॥ २८ ॥
भेष बहुत अधिकारी । मैं तिन्ह को कहौं पुकारी ॥ २९॥
अलख केस बहु भेसा । ते भ्रमत फिरहिं चहुं देसा ॥३०॥
बहु गुमान अहंकारी । इन्ह डारेउ सकल बिसारी ॥३१॥
बहुत फिरहिं गाफिलाई[2] । करि आसा अरुझाई ॥ ३२ ॥
केहू तपस्या ठाना । कोइ नगन भयो निर्बाना ॥ ३३ ॥
कोइ तीरथ बहुत अन्हाई । कोइ कंद मूरि खनि[3] खाई ॥३४
केहु करि घौंचहिं तूरा[4] । केहु सतगुरु मिल्यो न पूरा ॥३५॥
झूठे मुख अगिनि झकाही । कोइ ठाढ़े बैठे नाहीं ॥ ३६ ॥
मूठे करि देखी देखा । है न्यारा नाम अलेखा ॥ ३७ ॥
कोटि तीरथ यह काया । तेहि अंत न केहू पाया ॥ ३८ ॥
पाँची जिन्ह घट जानी । जन दूलन सो निरबानी ॥३९॥
राम अच्छर जेहि माहीं । जग तेहि समान कोउ नाहीं ॥४०॥

झूलना ।

(१)

पंखा चँवर सुरछल ढुरैं, सूबा सबै खिजमति करैं ।
जरबफत का तंबू तन्यो, बैठक बन्यो मसनंद का ॥

---

(१) दीन, उत्तम। (२) ग़ाफ़िल। (३) खोद कर। (४) पद्मासन बैठकर घुटनों में चिबुक लगाना।

दिन राति झाँगरि बाजती, सुघरी सहेली नाचती ।
पिलसूज[1] आगे यों जलै, उजियार मानो चंद का ॥
एके अतर चोवा चमेली, बेला खुसबोई लिये ।
एके कटोरे में किये, सरबत सलोना कंद का ॥
हिन्दू तुरुक दुइ दीन आलम, आपनी ताबीन[2] में ।
यह भी न दूलन खूबहै, करु ध्यान दसरथ-नंद का ॥

(२)

बर[3] जे अठारह बरन में, बितपन्य[4] हैं ब्याकरन में ।
पहिरे खराऊँ चरन में, जानै न स्वाद सरीर का ।
कुस मुद्रिका कर राखते, जे देव-बानी भाखते ।
नहिं अन्न आमिष[5] चाखते, नित पान करते छीर का ॥
धोती उपरना अंग में, रत बेद बिद्या रंग में ।
बिद्यारथी बहु संग में, जिन बास तीरथ तीर का ।
सूतहिं सदा भुइँ सेज जे, पूरे तपस्या तेज के ।
यह भी न दूलन खूब है, करु ध्यान श्री रघुबीर का ॥

(३)

राखे जटा जिन्ह माथ में, बीभूति लाये गात में ।
तिरसूल तौंबी हाथ में, छोड़ेउ सकल सुख धाम का ॥
भावे जहाँ जावैं तहाँ, पुर बीच में आवैं नहीं ॥
रुद्राच्छ का माला गरे, आला बिछावन चाम का ॥
दसहूँ दिसा जिन्ह घूमि कै, कीन्हेउ प्रदच्छिन[6] भूमि कै ।
फिरि मौन होइ बैठेउ तज्यो, मजकूर दौलति दाम का[7] ॥

(१) पतील-सोज़ यानी चौमुखी दीवट । (२) ताबेदारी । (३) श्रेष्ठ । (४) प्रवीन, कुशल । (५) माँस । (६) फेरी । (७) फिर मौन (चुप) साध कर बैठे और धन दौलत की चर्चा छोड़ दी ।

करि जोग देहीं जारते, हरताल पारा मारते ।
यह भी न झूलन खूब है, करु ध्यान स्यामा स्याम का ॥

(४)

देखे जो साहूकार हैं, करते सकल बैपार हैं ।
पूरा भरा भंडार है, कूबेर के सामान का ॥
सुथरी हवेली यों बनी, लागी जवाहर की कनी ।
आकाल छोड़ेउ देस जिन्ह की, देखि संपति सान[१] काँ ॥
साख[२] जिन्हैं की माल का, दरियाव के उस पार लौं ।
सो सकस है नाहीं कहूँ, जो ना करे परमान काँ ॥
ऐसा बड़ा बिस्तार है, धन का न वारा पार है ।
यह भी न झूलन खूब है, करु ध्यान स्री भगवान का ॥

(५)

ढोलक मजीरा बाजते, तेहि बीच नाउल[४] गाजते ।
संध्या समय तें भोर लौं, करि जोर झिटकैं माथ काँ ॥
अभुवात[५] हैं अभिमान तें, बाराहैं दिया जो पानि तें[६] ।
करि कोप मारैं बान तें, बैताल भाजे साथ का ॥
करि आस आलस सेवता, बिस्वास कारे देव[७] का ।
सो धन्य माने आप काँ, बीरा जो पावे हाथ का ॥
संसार की जादू पढ़ै, मरजाद जाही से बढ़ै ।
यह भी न झूलन खूब है, करु ध्यान स्री रघुनाथ का ॥

---

(१) शान = महिमा, प्रताप । (२) साख । (३) आदमी । ओझइत । (५) सिर हिलाते हैं जैसे भूत सिर पर आया हो । (६) ऐसी महिमा है कि उन का दीया तेल की जगह पानी में बलता है । (७) ओझइत काले देव की पूजा कराते हैं और उस पर सूअर का बच्चा और शराब चढ़वाते हैं ।

फुटकल ।

॥ शब्द १ ॥

साहिब अपने पास हो, कोइ दरद सुनावे ॥ टेक ॥

साहिब जल थल घट घट व्यापत, धरती पवन अकास हो। १
नीची अटरिया की ऊँचो दुवरिया, दियना बरत अकास हो २
सखिया इक पैठी जल भीतर, रटत पियास पियास हो ॥३
मुख नहिं पिये चिरुआ नहिं पीयै, नैनन पियत हुलास हो४
साईं सरवर[1] साईं जगजीवन[2], चरनन दूलनदास हो ॥५

॥ शब्द २ ॥

भजन करना है करी काम ॥ टेक ॥

मोही भूले मोह के बस में, क्रोधी भूले पड़ि हंकार ॥१॥
कामी भूले काम अगिन में, लोभी भूले जोरत दाम ॥२॥
जोगी भूले जोग जुगत में, पंडित भूले पढ़त पुरान ॥३॥
दूलनदास ओही जन तरिगे, आठ पहर जिन सुमिरा नाम४

॥ शब्द ३ ॥

सुरत चोरी काते निरमल ताग ॥ टेक ॥

तन का चरखा नाम का टेकुआ, प्रेम की पिउनी करि अनुराग१
सतगुरु धोबी अलख जुलाहा, मलिमलि धोवैं करम के दाग २
इतना पहिरि मन मानिक साजो, पिय अपने पर सबै सिंगार ३
दूलनदास अचल गुरु साहिब, गुरु के चरन पर मनुआँ लाग४

---

(१) तालाब, अधिष्ठाता। (२) जगत का आधार।

॥ शब्द ४ ॥

जोगी जोग जुगत नहिं जाना ॥ टेक ॥

गेरू घोरि रँगि कपरा जोगी, मन न रंगे गुरु ज्ञाना ॥१॥
पढ़ेहु न सत्त नाम दुइ अच्छर, सीखहु सो सकल सयाना २
साँची प्रीति हृदय बिनु उपजे, कहुँ रीझत भगवाना ॥३॥
दूलनदास के साइँ जगजीवन, मो मन दरस दिवाना ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

सुमिरौं मैं रामदूत हनुमान ।

समरथ लायक जन सुख-दायक, कर मुसकिल ओसान[1] ॥१॥
सील सुजस बल तेज अमित[2] जाके, छबि गुन ज्ञान निधान[3]।
भक्ति तिलक जा के सीस बिराजत, बाजत नाम निसान ॥२
जो कछु मो मन सोच होत तब, धरौं तुम्हारो ध्यान ।
तब तुम निकटहिं अहौ सहायक, कहँ लगि करौं बखान ॥३
रहौं असंक भरोस तुम्हारे, निस दिन साँझ बिहान ।
दूलन दास के परम हितू तुम, पवन-तनय[4] बलवान ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

इस नगरी हम अमल न पाया ॥टेक॥

साहिब भेजा नाम तसीलन[5], एकौ फौज न संग पठाया ।
आइ पड़े इस कठिन देस में, लूटन को सब मोहिं तकाया ॥१।
राजा तीन मनासिब[6] भारी, पाँच गढ़ी मजबूत बनाया ।
तिसमें पचतेदस भट[7] भारी, तिन यह मुलुक जगीरिन्ह खाया २

(१) सहज । (२) बेहद । (३) खज़ाना । (४) पवन के पुत्र अर्थात हनुमान ।
(५) तहसील करने । (६) अधिकारी । (७) योधा ।

अस सुभिरस[1] जब कतहुँ न देखा, धाय के सतगुरु सरन में आया
दीन जानि गुरु पाछे राखा, लड़ने की मोहिं जुगत बताया ३
दीन्हा तोप सलाखा[2] भारी, ज्ञान के गोला बरूत भराया।
सुरत पलीता दागि के मारा, टूटी गढ़ी फौज बिचलाया॥४
फौजदार मनुआँ ह्वै बैठा, जब थिर भये तो पकरि बुलाया।
पाँच पचीसो को बस करि के, नाम तसील खजाने आया॥५
साहिब पूर दीन दुनिया के, खबर पाय मोहिं बेग बुलाया।
दुलनदास के साईं जगजीवन, रीझि के भक्ति खिलत[3] पहिराया॥६

॥ शब्द ७ ॥

नीक न लागे बिनु भजन सिँगरवा ॥टेक॥
का कहि आयो हियाँ बरत्यो नाहीं, भूलि गयल तोरा कौल करारवा॥१
साचा रँग हिये उपजत नाहीं, भेष बनाय रँग लीन्हो कपरवा॥२
बिन रे भजन तोरी ई गति होइ है, बाँधल जैबै तू जम के दुवरवा॥३॥
दुलनदास के साईं जगजीवन, हरि के चरन पर हमरि लिलरवा॥४

॥ साखी ॥

गुरु महिमा

गुरु ब्रह्मा गुरु बिस्नु हैं, गुरु संकर गुरु साध।
दूलन गुरु गोबिन्द भजु, गुरुमत अगम अगाध ॥ १ ॥
ब्रह्मा बिस्नु ता पर ढुरैं[1] ढुरो भवानी ईस।
दूलनदास दयाल गुरु, हाथ दीन्ह जेहिं सीस ॥ २ ॥
पति सनमुख सो पतिब्रता, रन सनमुख सो सूर।
दूलन सत सनमुख सदा, गुरुमुख गनी[2] सो पूर ॥ ३ ॥
सतगुरु साहिब जगजिवन, इच्छा फल के दानि।
राखहु दूलनदास की, सुरत चरन लपटानि ॥ ४ ॥
दूलन दुइ कर जोरि कै, याँचै सतगुरु दानि।
राखहु सुरति हमारि दिढ़, चरन कँवल लपटानि ॥५॥
श्री सतगुरु मुख चन्द्र तें, सबद सुधा झरि लागि।
हृदय सरोवर राखु भरि, दूलन जागे भागि ॥ ६ ॥
सतगुरु तो मन माँ अहैं, जो मन लागै साथ।
दूलन चरन कमल गहि, दिहे रहौ दिढ़ माथ ॥ ७ ॥
दुई पहिया के रथ चढ़ेउँ, गुरू सारथी मोर।
दूलन खेलत प्रेम पथ, आड़ि जक्त की झोर[3] ॥ ८ ॥
दूलन गुरु तें बिषै बस, कपट करहिं जे लोग।
निर्फल तिन की सेव है, निर्फल तिन का जोग ॥ ९ ॥
छठवाँ माया चक्र सोइ, अरुझानि गगन दुवार।
दूलन बिन सतगुरु मिले, बेधि जाय को पार ॥ १० ॥

---

(१) अनुकूल हों। (२) धनी, बेपरवाह। (३) झकझोर।

नाम महिमा ।

दुलनदास जिन के हृदय, नाम बास जो आय ।
अष्ट सिद्धि नौ निद्धि बिचारी, ताहि छाड़ि कहँ जाय ॥१॥
गावै सूरत सुन्दरी, बैठी सत अस्थान ।
जन दूलन मन मोहिनी, नाम सुरंगी तान ॥ २ ॥
दूलन यहि जग जनमि कै, हर दम रटना नाम ।
केवल नाम सनेह बिनु, जन्म समूह[1] हराम ॥ ३ ॥
स्वास पलक माँ नाम भजु, वृथा स्वास जिनि खोउ ।
दूलन ऐसी स्वास से, आवन होउ न होउ ॥ ४ ॥
स्वास पलक माँ जातु है, पलकहिं माँ फिरि आउ ।
दूलन ऐसी स्वास से, सुमिरि सुमिरि रट लाउ ॥ ५ ॥
डौंडी[2] बाजै नाम की, बरन भेष की नाहिं ।
दूलनदास बिचारि अस, नाम रटहु मन माहिं ॥ ६ ॥
रसना रटि जेहि लागिगे, चाखि भयो मस्तान ।
दूलन पायो परम पद, निरखि भयो निर्बान ॥ ७ ॥
पैठेउँ मन होइ मरजिया, ढूँढ़ेउँ दिल दरियाउ ।
दूलन नाम रतन्न काँ, भागन कोउ जन पाउ ॥ ८ ॥
सुनत चिकार पिपील की, ताहि रटहु मन माहिं ।
दुलनदास बिस्वास भजु, साहिब बहिरा नाहिं ॥ ९ ॥
चितवन नीची ऊँच मन, नामहिं जिकिर लगाय ।
दूलन सूझै परम पद, अंधकार मिटि जाय ॥ १० ॥

(१) समस्त । (२) ढिंढोरा ।

दूलन चाख्यो नाम रस, बिधि सिव मन आधार।
जन्म जन्म जेहि अमल को, लागो रहै खुमार ॥ ११ ॥

ताहि बाउ लागै नहीं, आठौ पहर अनंद।
दूलन नाम सनेह तें, दिन दिन दसा दुचंद ॥ १२ ॥

दूलन केवल नाम धुनि, हृदय निरंतर ठानु।
लागत लागत लागिहै, जानत जानत जानु ॥ १३ ॥

दूलन केवल नाम लै, तिन भैंटेउ जगदीस।
तन मन छाकेउ दरस रस, थाकेउ पाँच पचीस ॥ १४ ॥

सीतल हृदय सुचित्त होइ, तजि कुतर्क कुबिचार।
दूलन चरनन परि रहै, नाम कि करत पुकार ॥ १५ ॥

कर्मन दृष्टि मलीन भै, मैं त्वैं परिगा फेरु।
दूलन साईं फेरि मिलु, नाम निरंतर टेरु ॥ १६ ॥

गुरू बचन बिसरै नहीं, कबहुँ न टूटै डोरि।
पियत रहौ सहजै दुलन, नाम रसायन घोरि ॥ १७ ॥

दुलन नाम पारस परसि, भयो लोह तें सोन।
कुन्दन होइ छि रेसमो, बहुरि न लोहा होन ॥ १८ ॥

दुलन भरोसे नाम के, तन तकिया धरि धीर।
रहै गरीब अतीम[१] होइ, तिन काँ कही फकीर ॥ १९ ॥

अंध कूप संसार तें, सूरत आनहु फेरि।
चरन सरन बैठारि कै, दुलन नाम रहु टेरि ॥ २० ॥

सबही सत सुधि बुद्धि सब, सुभ गुन सकल सलूक।
दूलन जो सत नाम तें, लाउ नेह निस्तूक[२] ॥ २१ ॥

---

(१) जिसके मा बाप मर गये हैं। (२) पक्के तौर पर, निश्चय करके।

अरुझि अरुझि टूटी जुरत, निगुनी पाउ सलूक[1] ।
दूलन ऐसे नाम तें, लाउ नेह निस्तूक ॥ २२ ॥
रटत कटत अघ क्रम फटत, भ्रम तम मिटु सब चूर ।
दूलन ऐसे नाम तें, लाउ नेह निस्तूक ॥ २३ ॥
अन्ध तकत बहिरे सुनत, धुनत बेद को मूक[2] ।
दूलन ऐसे नाम तें, लाउ नेह निस्तूक ॥ २४ ॥
बिपति सनेही मीत सो, नोति सनेहो राउ ।
दूलन नाम सनेह दृढ़, सोई भक्त कहाउ ॥ २५ ॥
सुरपति नरपति नागपति, तीनिउँ तिलक लिलार ।
दूलन नाम सनेह बिनु, धृग जीवन संसार ॥ २६ ॥
यहि कलि काल कुचाल तकि, आयो भागि डेराइ ।
दूलन चरनन परि रहे, नाम की रटनि लगाइ ॥ २७ ॥
दूलन नाम रस चाखि सोइ, पुष्ट पुरुष परबीन ।
जिन के नाम हृदय नहीं, भये ते हिजरा हीन ॥ २८ ॥
मरने की डेर छोड़ि कै, नाम भजो मन माहिँ ।
दूलन यहि जग जनमि कै, कोउ अमर है नाहिँ ॥ २९ ॥
नामी लोग सबै बड़े, काको कहिये छोट ।
सब हित दूलनदास जिन, लीन्ह नाम की ओट ॥३०॥
दूलन चरनन सीस दै, नाम रटहु मन माहँ ।
सदा सर्बदा जनम भरि, जा तें खैर सलाह ॥ ३१ ॥
नाम पुकारत राम जी, लागहिँ भक्त गुहारि ।
दूलन नाम सनेह की, गहि रहु डोरि सँभारि ॥ ३२ ॥

---

(१) सत्कार । (२) बहिरे ।

दुलन नाम आसा सदा, जगत आस दियो त्यागि ।
छूटै कैसे दास जी, हम तें तुम तें लागि ॥ ३३ ॥
कृपा कंठ उर बैठि कै, त्रिकुटी चिता बनाय ।
नाम अछर दुइ रगरि कै, पावक लेहु जगाय ॥ ३४ ॥
नाम अछर दुइ रटहु मन, करि चरनन तर बास ।
जन दूलन लौलीन रहु, कबहुँ न होहु उदास ॥ ३५ ॥
राम नाम दुइ अच्छरै, रटै निरंतर कोइ ।
दूलन दीपक बरि उठै, मन परतीत जो होइ ॥ ३६ ॥
नाम हृदय बिनु का कियो, कोटिन कपट कलाम ।
दूलन देखत पास हीं, अंतरजामी राम ॥ ३७ ॥
हम चाकर सतनाम के, भक्ति चाकरी हेत ।
दूलन दाता रामजी, मन इच्छा फल देत ॥ ३८ ॥
तीनिउँ करता लोक के, इहाँ उहाँ के राम ।
दूलन चरनन सीस दै, रटत रहौ वह नाम ॥ ३९ ॥
सुरत कलम हिय कागद, मसि करु सहज सनेह ।
दूलनदास बिस्वास करि, राम नाम लिखि लेह ॥ ४० ॥
दूलन दाता रामजी, सब कौं देत अहार ।
कैसे दास बिसारि हैं, आनहु मन इतिबार ॥ ४१ ॥
दुखित बिभीषन जानि कै, दीन्हेउ राज अजीत ।
दूलन कैसे छोड़िये, हरि गाढ़े के मीत ॥ ४२ ॥
पाँडव सुत हित कारने, कियो हुतासन[१] सीत ।
दूलन कैसे छोड़िये, हरि गाढ़े के मीत ॥ ४३ ॥

---

(१) महाभारत मे कथा है कि पाँडवों को अपनी राज गद्दी का काँटा समझ कर दुर्योधन ने धोखा देकर उन्हें उनकी माता कुन्ती सहित वाराणावत नगर

प्रन पालेउ प्रह्लाद को, प्रगटेउ प्रेम प्रतीत ।
दूलन कैसे छोड़िये, हरि गाढ़े के मीत ॥ ४४ ॥
जहर पान मीरै कियो, नेकु न लाग्यो सीत ।
दूलन कैसे छोड़िये, हरि गाढ़े के मीत ॥४५॥
संकठ में साथी भयो, हाथी जानि सभीत ।
दूलन कैसे छोड़िये, हरि गाढ़े की मीत ॥४६॥
चारा पील पिपील को, जो पहुँचावत रोज ।
दूलन ऐसे नाम की, कीन्ह चाहिये खोज ॥४७॥
भूप एक भुवनेस्वर, रामचंद्र महराज ।
दूलन और केतानि को, राज तिलक जेहिं छाज ॥४८॥
इत उत की लज्या तुम्हैं, रामराय सिर मौर ।
दूलन चरनन लगि रहे, राखि भरोसा तोर ॥४९॥
कबहीं अरथो पारसो, पढ़यो द्रोपदी जाइ ।
दूलन लज्या रामजी, लीन्हीं चीर बढ़ाइ ॥ ५० ॥
कबहिं पराकृत संसकृत, पढ़ि कियो पील पुकारि
दूलन लज्या रामजी, लीन्हीं ताहि उबारि ॥ ५१ ॥
चहिये सो करि है सरम, साईं तेरे दस्त ।
बाँध्यो चरन सनेह मन, दुलनदास रस मस्त ॥५२॥

को भेज दिया जहाँ एक महल लाह का अपने मंत्री पुरोचन के द्वारा बनवा रक्खा था इस मतलब से कि उस में पांडवों को टिकावें और जब अवसर मिले आग लगा दें कि वहीं सब जल भुन कर मर जायँ परंतु उन के ईश्वर भक्त चचा विदुरजी को यह बात मालूम हो गई सो उन्हाँने युधिष्ठिर को चेता कर एक सुरंग उस महल में रात को इस तरह की खुदवा दी कि पांडव आप महल मे आग लगा कर उस की राह से कुन्ती सहित निकल भागे और दुष्ट पुरोचन उस लाह के मन्दिर में जल गया ।

तुला रासि सीनिउँ सदा, जा को मन इक ठौर ।[1]
राम पियारे भक्ति सोइ, दूलन के सिरमौर ॥ ५३ ॥

दूलन एक गरीब के, हरि से हितू न और ।
ज्यौं जहाज के काग को, सूझै और न ठौर ॥ ५४ ॥

त्रिभुवन करता रामजी, दास तुम्हार कहाइ ।
तुम्हैं छाड़ि दूलन कहो, केहि काँ याँचन जाइ ॥ ५५ ॥

राम नाम दीपक सिखा, दूलन दिल ठहराय ।
करम बिचारे सलभ[2] से, जरहिं उड़ाय उड़ाय ॥ ५६ ॥

शब्द महिमा ।

सूर चन्द नहिं रैन दिन, नहिं तहँ साँझ बिहान ।
उठत सब्द धुनि सुन्य माँ, जन दूलन अस्थान ॥ १ ॥

जगजीवन के चरन मन, जन दूलन आधार ।
निसु दिन बाजै बाँसुरी, सत्य सब्द झनकार ॥ २ ॥

चरचा बाद बिबाद की, संगति दीन्हेउ त्यागि ।
दूलन माते अधर धुनि, भक्ति खुमारी[3] लागि ॥ ३ ॥

कोउ सुनै राग रु रागिनी, कोउ सुनै कथा पुरान ।
जन दूलन अब का सुनै, जिन सुनी मुरलिया तान ॥ ४ ॥

सब्दै नानक नामदेव, सब्दै दास कबीर ।
सब्दै दूलन जगजिवन, सब्दै गुरु अरु पीर ॥ ५ ॥

---

(१) जिस का मन एक ठौर अर्थात् स्थिर है उस के तराज़ू की तीनों डोरियाँ सदा एक सम और नथी हैं, भाव तिरगुन का वेग नहीं व्यापता। (२) पतंगा। (३) नशा।

सत मत महिमा।

दूलन यह मत गुप्त है, प्रगट न करो बखान।
ऐसे राखु छिपाइ मन, जस बिधवा ओधान[1] ॥ १ ॥
रीझि सबद सो भींजि रस, मत माते गलतान।
दूलन भागन भक्त कोइ, ठहराने अस्थान ॥ २ ॥
सूचे सोइ ऊँचे दुहुन, चहुँ दिसि देखि बिचारि
दूलन चाखा आइ जिन्ह, यह रस ऊख हमारि ॥ ३ ॥

चितावनी।

दूलन यह परिवार सब, नदी नाव संजोग।
उतरि परे जहँ तहँ चले, सबै बटाऊ लोग ॥ १ ॥
दूलन यहि जग आइ के, का को रहा दिमाक[2]।
चंद रोज को जीवना, आखिर होना खाक ॥ २ ॥
दूलन काया कबर है, कहँ लगि करौं बखान।
जीवत मनुआँ मरि रहै, फिरि यहि कबर समान ॥ ३ ॥

उपदेश।

बंधन सकल छुड़ाय करि, चित चरनन तें बाँधु।
दूलनदास बिस्वास करि, साइँ काँ औराधु ॥ १ ॥
ज्ञानी जानहिं ज्ञान बिधि, मैं बालक अज्ञान।
दूलन भजु बिस्वास मन, धुरपुर बाजु निसान ॥ २ ॥

---

(१) गर्भ, हमल। (२) दिमाग़ = घमंड।

दूलन बिरवा प्रेम को, जामेउ जेहि घट माहिँ ।
पाँच पचीसौ थकित भे, तेहि तरवर की छाहिँ ॥ ३ ॥
जग्य दान तप तीर्थ व्रत, धर्म जे दूलनदास ।
भक्ति-आसरित तप सबै, भक्ति न केहु की आस ॥ ४ ॥
दुलन तिरथ तप दान तें, और पाप मिटि जाइ ।
भक्त-द्रोह अघ ना मिटै, करै जे कोटि उपाय ॥ ५ ॥
पेट ठठावहिँ स्वास गहि, मूँदहिँ दसहुँ दुवार ।
दूलन रीझै न प्रेम बिनु, सत्त नाम करतार ॥ ६ ॥
धृग तन धृग मन धृग जनम, धृग जीवन जग माहिँ ।
दूलन प्रीति लगाय जिन्ह, ओर निबाही नाहिँ ॥ ७ ॥
प्रेम पियारे पाहुना, दूलन ढूँढ़त ताहि ।
मोल महँग दूलन दरस, भक्त सोई जग माहिँ ॥ ८ ॥
समरथ दूलनदास के, आस तोष[१] तुम राम ।
तुम्हरे चरनन सीस दै, रटौं तुम्हारो नाम ॥ ९ ॥
सरबस दूलनदास के, केवल नाम प्रसाद ।
महतत सिधि औ सर्ब सुभ, सुफल आदि औलाद ॥१०॥

धीरज ।

दूलन सतगुरु मत कहै, धीरज बिना न ज्ञान ।
निरफल जोग सँतोष बिन, कहौं सब्द परमान ॥ १ ॥
दूलन धीरज खंभ कहँ, जिकिरि बड़ेरा लाइ ।
सूरत डोरी पोढ़ि करि, पाँच पचीस झुलाइ ॥ २ ॥

(१) आनंद ।

आपनि सूरत दृढ़ करै, मन मूरति के पास ।
राजी रहै रजाइ पर, सोई दूलनदास ॥ ३ ॥
बिहबल बिकल मलीन मन, डगमग कृत जंजाल ।
सब कर औषधि एक यह, दूलन मिलि रहु हाल ॥४॥
दूलन चरनन लागि रहु, नाम को करत पुकार ।
भक्ति सुधारस पेट भरु, का दहुँ लिखा लिलार ॥५॥
जग रहु जग तेँ अलग रहु, जोग जुगुत को रीति ।
दूलन हिरदे नाम तेँ, लाइ रहौ दृढ़ प्रीति ॥६॥

बिनय ।

साईं तेरी सरन हौँ, अब को मोहिँ निवाज ।
दूलन के प्रभु राखिये, यहि बाना की लाज ॥ १ ॥
दूलन दुइ कर जोरि कै, बिनती सुनहु हमारि ।
हे सखि मोहिँ बसाइ दे, साईं के अनुहारि ॥ २ ॥
इत उत की लज्या तुम्हैँ, रामराय सिर मौर ।
दूलन चरनन लगि रहै, राखि भरोसा तोर ॥ ३ ॥

प्रेम ।

दूलन सत मनि छबि लहौ, निरखि चरन धरि सीस ।
लागि प्रेम रस मस्त ह्वै, थाके पाँच पचीस ॥ १ ॥
दुलन कृपा तेँ पाइये, भक्ति न हाँसी ख्याल ।
काहू पाई सहज हीँ, कोउ ढूँढ़त फिरत बिहाल ॥ २ ॥

दूलन बिरवा प्रेम को, जामेउ जेहि घट माहिँ ।
पाँच पचीसौ थकित भे, तेहि तरवर की छाहिँ ॥ ३ ॥

जग्य दान तप तीर्थ ब्रत, धर्म जे दूलनदास ।
भक्ति-आसरित तप सबै, भक्ति न केहु की आस ॥ ४ ॥

दुलन तिरथ तप दान तेँ, और पाप मिटि जाइ ।
भक्त-द्रोह अघ ना मिटै, करै जे कोटि उपाय ॥ ५ ॥

पेट ठठावहिँ स्वास गहि, मूँदहिँ दसहुँ दुवार ।
दूलन रीझै न प्रेम बिनु, सत्त नाम करतार ॥ ६ ॥

धृग तन धृग मन धृग जनम, धृग जीवन जग माहिँ ।
दूलन प्रीति लगाय जिन्ह, ओर निबाही नाहिँ ॥ ७ ॥

प्रेम पियारे पाहुना, दूलन ढूँढ़त ताहि ।
मोल महँग दूलन दरस, भक्त सोई जग माहिँ ॥ ८ ॥

समरथ दूलनदास के, आस तोष[1] तुम राम ।
तुम्हरे चरनन सीस दै, रटौं तुम्हारो नाम ॥ ९ ॥

सरबस दूलनदास के, केवल नाम प्रसाद ।
महतत सिधि औ सर्ब सुभ, सुफल आदि औलाद ॥१०॥

धीरज ।

दूलन सतगुरु मत कहै, धीरज बिना न ज्ञान ।
निरफल जोग सँतोष बिन, कहैं सब्द परमान ॥ १ ॥

दूलन धीरज खंभ कहँ, जिकिरि बड़ेरा लाइ ।
सूरत डोरी पोढ़ि करि, पाँच पचीस झुलाइ ॥ २ ॥

---

(१) आनंद ।

आपनि सूरत दृढ़ करै, मन मूरति के पास ।
राजी रहै रजाइ पर, सोई दूलनदास ॥ ३ ॥
बिह्बल बिकल मलीन मन, डगमग कृत जंजाल ।
सब कर औषधि एक यह, दूलन मिलि रहु हाल ॥४॥
दूलन चरनन लागि रहु, नाम की करत पुकार ।
भक्ति सुधारस पेट भरु, का दहुँ लिखा लिलार ॥५॥
जग रहु जग तेँ अलग रहु, जोग जुगुत को रीति ।
दूलन हिरदे नाम तेँ, लाइ रहो दृढ़ प्रीति ॥६॥

बिनय ।

साईं तेरी सरन हौँ, अब को मोहिँ निवाज ।
दूलन के प्रभु राखिये, यहि बाना की लाज ॥ १ ॥
दूलन दुइ कर जोरि कै, बिनती सुनहु हमारि ।
हे सखि मोहिँ बताइ दे, साईं कै अनुहारि ॥ २ ॥
इत उत की लज्या तुम्हैं, रामराय सिर मौर ।
दूलन चरनन लगि रहै, राखि भरोसा तोर ॥ ३ ॥

प्रेम ।

दूलन सत मनि छबि लहौ, निरखि चरन धरि सीस
लागि प्रेम रस मस्त ह्वै, थाके पाँच पचीस ॥ १ ॥
दुलन कृपा तेँ पाइये, भक्ति न हाँसी ख्याल ।
काहू पाई सहज हीँ, कोउ ढूँढ़त फिरत बिहाल ॥ २

दूलन बिरवा प्रेम को, जामेउ जेहि घट माहिँ ।
पाँच पचीसौ थकित भे, तेहि तरवर की छाहिँ ॥ ३ ॥

जग्य दान तप तीर्थ ब्रत, धर्म जे दूलनदास ।
भक्ति-आसरित तप सबै, भक्ति न केहु को आस ॥ ४ ॥

दुलन तिरथ तप दान तेँ, और पाप मिटि जाइ ।
भक्त-द्रोह अघ ना मिटै, करै जे कोटि उपाय ॥ ५ ॥

पेट ठठावहिँ स्वास गहि, मूँदहिँ दसहुँ दुवार ।
दूलन रीझै न प्रेम बिनु, सत्त नाम करतार ॥ ६ ॥

धृग तन धृग मन धृग जनम, धृग जीवन जग माहिँ ।
दूलन प्रीति लगाय जिन्ह, ओर निबाही नाहिँ ॥ ७ ॥

प्रेम पियारे पाहुना, दूलन ढूँढ़त ताहि ।
मोल महँग दूलन दरस, भक्त सोई जग माहिँ ॥ ८ ॥

समरथ दूलनदास के, आस तोष[1] तुम राम ।
तुम्हरे चरनन सीस दै, रटौं तुम्हारो नाम ॥ ९ ॥

सरबस दूलनदास के, केवल नाम प्रसाद ।
महतत सिधि औ सर्ब सुभ, सुफल आदि औलाद ॥१०॥

धीरज ।

दूलन सतगुरु मत कहै, धीरज बिना न ज्ञान ।
निरफल जोग सँतोष बिन, कहैं सबद परमान ॥ १ ॥

दूलन धीरज खंभ कहँ, जिकिरि बड़ेरा लाइ ।
सूरत डोरी पोढ़ि करि, पाँच पचीस झुलाइ ॥ २ ॥

---

(१) आनंद ।

दासातन ।

सती अगिन की आँच सहि, लोह आँच सहि सूर ।
दूलन सत आँचहि सहै, राम भक्त सो पूर ॥ १ ॥
जथाजोग जस चाहिये, सो तैसे फल देइ ।
दूलन ऐसे राम के, चरन कँवल रहै सेइ ॥२॥

साधु महिमा ।

दुलन साधु सब एक हैं, बाग फूल सम तूल ।
कोइ कुदरती सुबास है, और फूल के फूल ॥ १ ॥
जा दिन संत सताइया, ता छिन उलटि खलक[1] ।
छत्र खसै धरनी धसै, तीनिउँ लोक गरक्क[2] ॥ २ ॥

फुटकल

भाग बड़े यहि जक्त मा, जेहि के मन बैराग ।
बिषय भोग परिहरि दुलन, चरन कमल चित लाग ॥१॥
दूलन पीतम जेहि चहैं, कही सुहागिल ताहि ।
आपन आपन भाग है, साझा काहु क नाहिँ ॥ २ ॥
जगत मातु बनिता अहै, बूझो जगत जियाव ।
निंदन जोग न ये दोऊ, कहि दूलन सत भाव ॥ ३ ॥

(१) ख़लक़=सृष्टि। (२) डूब जाना।

बनिता ऐसी द्वै बड़ी, देखा यहि संसार।
दूलन बन्दै दुहुन को, झूठे निंदनहार ॥ ४ ॥
दूलन चेला चाम को, आयो पहिरि जहान।
इहाँ कमाई बसि भयो, सहना औ सुलतान ॥ ५ ॥
दूलन छोटे वे बड़े, मुसलमान का हिन्दु।
भूखे देवैं भौरियाँ[१], सेवैं गुरु गोबिन्दु ॥ ६ ॥
भूँखेहि भोजन दिहे भल, प्यासे दीन्हे पानि।
दूलन आये आदरौ[२], कहि सु सबद सनमान[२] ॥ ७ ॥
काल कर्म की गम नहीं, नहिं पहुँचे भ्रम बान।
दूलन चरन सरन रहु, छेम कुसल अस्थान ॥ ८ ॥
दूलन यह तन जक्त भा, मन सेवै जगदीस।
जब देख्यो तबही पर्यो, चरनन दीन्हे सीस ॥ ९ ॥
दूलन प्रेम प्रतीत तें, जो बंदै हनुमान।
निसु बासर ता की सदा, सब मुसकिल आसान ॥ १० ॥
दुलन चरन चित लाइ कै, अंतर धरै न ध्यान।
निसुबासर थकि थकि मरै, ना मानी सो आन ॥ ११ ॥
दूलन कथा पुरान सुनि, मते न माते लोग।
वृथा जनम रस भोग बिनु, खोया को संजोग ॥ १२ ॥
बेद पुरान कहा कहेउ, कहा किताब कुरान।
पंडित काजी सत्त कहु, दूलन मन परमान ॥ १३ ॥

(१) लिट्टियाँ। (२) आदर या ख़ातिरदारी।

दुलन प्रीत मरजाद हम, देखा यहि संसार ।
धेला छः दमरी हद, पैसा का ब्योहार ॥ १४ ॥
कबहुँ प्रगट नैनन निकट, कबहूँ दूरि छिपानि ।
दूलन दीनदयाल ज्यों, मालव मारू पानि[1] ॥१५।
दूलन भक्तन के हिसिक, चलै कोऊ संसार ।
भक्तिहीन हिसकन चलै, ता सिर परै खभार[2] ॥ १६ ॥

(१) संस्कृत मे "मालव" मालवा देश का कहते हैं जहाँ पानी की बहुतायत है, और मारू माड़वार देश का नाम है जहाँ की भूमि बलुई (मरु) है और पानी का अकाल है। (२) खरावी।

बेलवेडियर प्रेस, कटरा, प्रयाग की पुस्तकें

संतबानी पुस्तकमाला

[हर महात्मा का जीवन-चरित्र उनकी बानी के आदि में दिया है]

पुस्तक	मूल्य
कबीर साहिब का बीजक	|||)
कबीर साहिब का साखी-संग्रह	१=)
कबीर साहिब की शब्दावली, पहला भाग	|||)
कबीर साहिब की शब्दावली, दूसरा भाग	|||)
कबीर साहिब की शब्दावली, तीसरा भाग	|=)
कबीर साहिब की शब्दावली, चौथा भाग	≡)
कबीर साहिब की ज्ञान-गुदड़ी, रेख़ते और भूलने	|=)
कबीर साहिब की अखरावती	=)
धनी धरमदास जी की शब्दावली	||-)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली भाग १	१=)
तुलसी साहिब दूसरा भाग पद्मसागर ग्रंथ सहित	१=)
तुलसी साहिब का रत्नसागर	१|-)
तुलसी साहिब का घट रामायण पहला भाग	१||)
तुलसी साहिब का घट रामायण दूसरा भाग	१||)
गुरु नानक की प्राण-संगली दूसरा भाग	१||)
दादू दयाल की बानी भाग १ "साखी"	१||)
दादू दयाल की बानी भाग २ "शब्द"	१|)
सुन्दर बिलास	१-)
पलटू साहिब भाग १—कुंडलियाँ	|||)
पलटू साहिब भाग २—रेख़्ते, भूलने, अरिल, कबित्त, सवैया	|||)
पलटू साहिब भाग ३—भजन और साखियाँ	|||)
जगजीवन साहिब की बानी, पहला भाग	|||-)
जगजीवन साहिब की बानी दूसरा भाग	|||-)
दूलन दास जी की बानी,	|)||

चरनदास जी की बानी, पहला भाग	|||-)
चरनदास जी की बानी, दूसरा भाग	|||)
गरीबदास जी की बानी	१|-)
रैदास जी की बानी	||)
दरिया साहिब (बिहार) का दरिया सागर	|≡)||
दरिया साहिब के चुने हुए पद और साखी ...	|-)
दरिया साहिब (मारवाड़ वाले) की बानी	|≡)
भीखा साहिब की शब्दावली	||=)||
गुलाल साहिब की बानी	|||=)
बाबा मलूकदास जी की बानी	|)||
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी	-)
यारी साहिब की रत्नावली	=)
बुल्ला साहिब का शब्दसार	|)
केशवदास जी की अमींघूँट	-)||
धरनी दास जी की बानी	|=)
मीराबाई की शब्दावली	||=)
सहजो बाई का सहज-प्रकाश	|≡)||
दया बाई की बानी	|)
संतबानी संग्रह, भाग १ (साखी) [प्रत्येक महात्माओं के संक्षिप्त जीवन चरित्र सहित]	१||)
संतबानी संग्रह, भाग २ (शब्द) [ऐसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन चरित्र सहित जो भाग १ में नहीं हैं]	१||)
	कुल २३||≡)
अहिल्या बाई ...	≡)

दाम में डाक महसूल व रजिस्टरी शामिल नहीं है वह इसके ऊपर लिया जायगा—

मिलने का पता—

मैनेजर, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

मूल्य केवल ६॥) । इसी असली रामायण का एक सस्ता संस्करण ११ बहुरंगा और ९ रंगीन यानी कुल २० सुन्दर चित्र सहित और सजिल्द १२०० पृष्ठों का मूल्य ४॥) । प्रत्येक कांड अलग अलग भी मिल सकते हैं और इनके काग़ज़ उमदा हैं।

प्रेम-तपस्या—एक सामाजिक उपन्यास (प्रेम का सच्चा उदाहरण) मूल्य ॥)

लोक परलोक हितकारी—इसमें कुल महात्माओं के उत्तम उपदेशों का संग्रह किया गया है। पढ़िये और अनमोल जीवन को सुधारिये। मूल्य ।॥=)

विनय कोश—विनयपत्रिका के सम्पूर्ण शब्दों का अकारादि क्रम से संग्रह करके विस्तार से अर्थ है। यह मानस-कोश का भी काम देगा। मूल्य २)

हनुमान बाहुक—प्रति दिन पाठ करने के योग्य, मोटे अक्षरों में शुद्ध छपी है। मूल्य ‐)॥

तुलसी ग्रन्थावली—रामायण के अतिरिक्त तुलसीदास जी के अन्य ग्यारहों ग्रन्थ शुद्धता पूर्वक मोटे मोटे बड़े अक्षरों में छपे हैं और पाद टिप्पणी में कठिन शब्दों के अर्थ दिये हैं। सचित्र व सजिल्द मूल्य ४)

कवित्त रामायण—पं० रामगुलाम जी द्विवेदी कृत पाद टिप्पणी में कठिन शब्दों के अर्थ सहित छपी है। मूल्य ।≈)

नरेन्द्र-भूषण—एक सचित्र सजिल्द उत्तम मौलिक जासूसी उपन्यास है। मूल्य १)

सदेह—यह एक मौलिक क्रांतकारी नया उपन्यास है। बिना जिल्द ॥।) सजिल्द १)

चित्रमाला भाग १—सुन्दर मनोहर १२ रंगीन चित्रों का संग्रह तथा परिचय है। मूल्य ।॥)

चित्रमाला भाग २—सुन्दर मनोहर १२ रंगीन चित्रों का संग्रह है। मूल्य ।॥)

चित्रमाला भाग ३—सुन्दर मनोहर १२ रंगीन चित्रों का संग्रह है मूल्य १)

चित्रमाला भाग ४—१२ रंगीन सुंदर चित्र तथा चित्र-परिचय है मूल्य १)

गुटका रामायण—यह असली तुलसीकृत रामायण अत्यन्त शुद्धता पूर्वक छोटे रूप में है। पृष्ठ संख्या लगभग ४५० के है। इसमें अति सुन्दर ८ बहुरंगे और ५ रंगीन चित्र हैं। तेरहो चित्र अत्यन्त भावपूर्ण और मनमोहक हैं। रामायण प्रेमियों के लिये यह रामायण अपूर्व और लाभदायक है। जिल्द बहुत सुन्दर और मज़बूत तथा सुनहरी है। मूल्य केवल लागत मात्र १॥)

घोंघा गुरू की कथा—इस देश में घोंघा गुरू की हास्यपूर्ण कहानियाँ बड़ी ही प्रचलित हैं। उन्हीं का यह संग्रह है। शिक्षा लीजिए और ख़ूब हँसिए। ।)

गल्प पुष्पाञ्जलि—इसमें बड़ी उमदा उमदा गल्पों का संग्रह है। पुस्तक सचित्र और दिलचस्प है। दाम ॥‐)

हिन्दी साहित्य सुमन— दाम ॥)